की जय कहां से आ गया। फिर हम देखते हैं कि 1857 के पहले शायद ये नारा नहीं था। देश के अन्दर जब स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुआ, उस आन्दोलन में राजनैतिक राष्ट्रवाद को समाप्त करते हुए भारत को खड़ा करने के लिए ऐसा किया गया। उस समय स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि चार सौ साल तक सारे देवी-देवताओं को कपड़े में बांधकर रख दो। हमारा एक ही देवता है और वह भारत माता है, इसी की पूजा करो। यहां से भारत माता जी जय का उदय हुआ। भारत माता की जय का यह भाव जितना पुष्ट होता जाएगा उतना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जागृत होगा। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने जब वन्दे मातरम लिखा। आनंन्द मठ में जब वन्देमातरम आया। किस मातृभूमि को वन्दना करने की बात कही गई।

भारतभूमि की, यहां की संस्कृति की, यहां के मूल्यों की। इसलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने के लिए सही दृष्टिकोण विकसित करना होगा। कभी कभी लगता है कि लोग भारत माता की जय का विरोध ज़्यों करते हैं? यह विरोध वही लोग करते हैं जो इस भूमि को मां नहीं मानते। विरोध वही करते हैं जिन्होंने इस भूमि को भोगभूमि माना लिया है। विरोध वही करते हैं जिनके मन में आक्रमकता है। ऐसी सोच रखने वाले ही भारत माता की जय का विरोध करते हैं। इसलिए मैं फिर कहना चाहूंगा कि हम परमवैभव को प्राप्त होने की बात करते हैं तो आज की आवश्यकता है कि हर पीढ़ी में जन्म लिए हुए बालक में श्रेष्ठ जीवन और परमवैभव की आकांक्षा का बीजारोपण करते रहना पड़ेगा। हमें समझना होगा कि गुरूगोविन्द सिंह जी ने अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए दीनदयालजी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का संकेत ज़्या है? यही संकेत है कि हमें इस भाव को सशज़्त करना पड़ेगा और इस भाव को जागृत रखने का संकल्प लेकर चलने वाली पीढ़ी खड़ी करनी होगी।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय सुरेश जोशी (भय्याजी) द्वारा अजमेर, जयपुर, कोलकता में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित अलग-अलग कार्यक्रम में मार्गदर्शन किया गया। इन्दौर में 14 अगस्त, 2017 को भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विषय पर आयोजित गोष्ठी में भय्याजी का मार्गदर्शन प्रस्तुत किया जा रहा है।)